Curriculum Studies
Sem - II
Paper - III
Unit - I

प्र० पाठ्य की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
अथवा
पाठ्यक्रम का अर्थ एवं परिभाषा दीजिये। तथा पाठ्यक्रम के मूलतत्वों का वर्णन करे।
अथवा
पाठ्यक्रम के उद्देश्यों पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर प्रस्तावना :- शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया मानी जाती है जिसमें बालक के बहुमुखी तथा सर्वांगीण विकास का प्रयास किया जाता है। शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षण, अनुदेशन तथा प्रशिक्षण की क्रियाओं को प्रयुक्त किया जाता है। जिनसे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन किया जाता है। शिक्षण की क्रियाओं का सम्पादन का आधार पाठ्यवस्तु

अथवा विषय वस्तु होती है पाठ्यवस्तु विकास के लिए एक प्रमुख साधन है परन्तु अतीत में इसे साध्य भी माना जाता रहा है। शिक्षक अपनी शिक्षण क्रियाओं द्वारा ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है जिसमें छात्रों को नये अनुभव होते हैं तथा उन्हें कुछ करना भी पड़ता है। परिणाम यह होता है कि उनमें अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन होता है अथवा वे सीखते हैं। विषयवस्तु के प्रारूप को साधारणतः पाठ्यक्रम कहते हैं। शिक्षा तथा शिक्षण का स्वरूप पाठ्यक्रम के प्रारूप द्वारा निर्धारित होता है शिक्षा की प्रक्रिया की धुरी पाठ्यक्रम है। शिक्षा के इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है कि पाठ्यक्रम का अर्थ एवं इसका प्रारूप बदलता रहा है

पाठ्यक्रम का अर्थ :-

अंग्रेजी भाषा में पाठ्यक्रम के लिए 'करीक्युलम' Curriculum शब्द का प्रयोग किया जाता है परन्तु 'करीक्युलम' लैटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है "दौड़ का मैदान"। शिक्षा के अन्तर्गत इसका अर्थ है "छात्रों का कार्य क्षेत्र" अथवा "छात्रों का दौड़ का मैदान"। यहाँ पर दो शब्द दौड़ तथा मैदान

प्रयुक्त किये है। 'मैदान' का अर्थ पाठ्यक्रम से और दौड़ का अर्थ छात्रों द्वारा अनुभव एवं उनकी क्रियाओं से है। शिक्षक पाठ्यक्रम की सहायता से अपनी शिक्षण क्रियाओं का सम्पादन करता है जिससे छात्र अनुभव तथा क्रियाएं करके अपना विकास करता है और अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाता है।

पाठ्यक्रम के अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास विभिन्न दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने भी किया है समाजशास्त्री पाठ्यक्रम का अर्थ अधिक लगाते है उनके अनुसार 'पाठ्यक्रम' शब्द का अर्थ उन सभी क्रियाओं एवं परिस्थितियों से होता है जिनका नियोजन एवं सम्पादन विद्यालय द्वारा बालकों के विकास के लिए किया जाता है। शिक्षा के उद्देश्य बदलते रहते रहे हैं इसलिए पाठ्यक्रम का नियोजन एवं उसका प्रारूप भी बदलता रहा है इसलिए पाठ्यक्रम का अर्थ भी बदलता रहा है।

पाठ्यक्रम की परिभाषा :-

फ्राबेल के अनुसार- "पाठ्यक्रम को मानव जाति के सम्पूर्ण ज्ञान तथा अनुभवों का सार समझना चाहिए।"

* मुनरो ने कहा है कि –
"पाठ्यक्रम में वे सब क्रियाएं सम्मिलित हैं जिनका हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यालय में उपयोग करते हैं।"

* माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार –
"पाठ्यक्रम का अर्थ रूढ़िवादी ढंग से पढ़ाये जाने वाले बौद्धिक विषयों से नहीं है परन्तु इसके अन्दर वे सभी क्रिया-कलाप आ जाते हैं जो बालकों को कक्षा के बाहर तथा भीतर प्राप्त होते हैं।"

* पाल हिस्ट के अनुसार –
"उन सभी क्रियाओं का प्रारूप जिनके द्वारा छात्र शैक्षिक लक्ष्यों अथवा उद्देश्यों को प्राप्त कर लेंगे पाठ्यक्रम की संज्ञा दी जाती है।"

कनिंघम के अनुसार –
"कलाकार (शिक्षक) के हाथ में यह (पाठ्यक्रम) एक साधन है जिससे वह पदार्थ (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श उद्देश्य के अनुसार अपने स्टूडियो (स्कूल) में ढाल सके।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम में सम्पूर्ण क्रियाओं एवं अनुभवों को सम्मिलित किया जाता है जो बालक में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन में सहायक होते हैं।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :- शिक्षा की प्रक्रिया के तीन प्रमुख घटक होते हैं - 1 शिक्षक 2 शिक्षार्थी 3 पाठ्यक्रम। शिक्षण में शिक्षक तथा छात्र के मध्य अन्तःक्रिया पाठ्यक्रम के माध्यम से होती है। इस प्रकार पाठ्यक्रम शिक्षण की क्रियाओं को दिशा प्रदान करते हैं। इस प्रकार पाठ्यक्रम शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है:-

1. पाठ्यक्रम बालक के सम्पूर्ण विकास हेतु साधन प्रदान करता है जिसकी सहायता से शिक्षण की क्रिया को सम्पादित किया जाता है।
2. पाठ्यक्रम को मानव जाति के अनुभवों को सम्मिलित रूप से स्पष्ट करके संस्कृति तथा सभ्यता को सम्पादित किया जाता है।

3. पाठ्यक्रम को बालक में मित्रता, ईमानदारी, निष्पक्षता सहयोग, सहनशीलता, सहानुभूति एवं अनुशासन आदि गुणों को विकसित करके नैतिक चरित्र का निर्माण करना।

4. पाठ्यक्रम को बालक की चिन्तन, मनन, तर्क तथा विवेक एवं निर्णय आदि सभी मानसिक शक्तियों का विकास करना।

5. पाठ्यक्रम को बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाओं से सम्बन्धित सभी आवश्यकताओं, मनोवृत्तियों तथा क्षमताओं एवं योग्यताओं के अनुसार नाना प्रकार की सर्जनात्मक तथा रचनात्मक शक्तियों का विकास करना।

6. पाठ्यक्रम को सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों एवं कलाओं तथा धर्मों के आवश्यक ज्ञान द्वारा ऐसे गतिशील तथा लचीले मस्तिष्क का निर्माण करना चाहिए जो प्रत्येक

परिस्थिति में साधनपूर्ण तथा साहसपूर्ण बनाकर नवीन मूल्यों का निर्माण करना।

7. पाठ्यक्रम को ज्ञान तथा खोज की सीमाओं को बढ़ाने के लिए अन्वेषकों का सृजन करना।

8. पाठ्यक्रम को बालक में जनतंत्रीय भावना का विकास करना।

9. पाठ्यक्रम शिक्षण प्रक्रियाओं तथा शिक्षक तथा छात्रों के मध्य अन्तः प्रक्रिया के स्वरूप निर्धारित करना।

पाठ्यक्रम के मूल तत्व

शिक्षा की प्रक्रिया का सम्पादन शिक्षक द्वारा किया जाता है। शिक्षक अपनी क्रियाओं का नियोजन कक्षा शिक्षण के लिए करता है उसमें प्रमुख तीन तत्व होते हैं – उद्देश्य, पाठ्य वस्तु एवं शिक्षण विधियाँ

3. पाठ्यक्रम को बालक में मित्रता, ईमानदारी, निष्कपटता सहयोग, सहनशीलता, सहानुभूति एवं अनुशासन आदि गुणों को विकसित करके नैतिक चरित्र का निर्माण करना।

4. पाठ्यक्रम को बालक की चिन्तन, मनन, तर्क तथा विवेक एवं निर्णय आदि सभी मानसिक शक्तियों का विकास करना।

5. पाठ्यक्रम को बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाओं से सम्बन्धित सभी आवश्यकताओं, मनोवृत्तियों तथा क्षमताओं एवं योग्यताओं के अनुसार नाना प्रकार की सर्जनात्मक तथा रचनात्मक शक्तियों का विकास करना।

6. पाठ्यक्रम को सामाजिक तथा प्राकृतिक विषयों एवं कलाओं तथा धर्मों के आवश्यक ज्ञान द्वारा ऐसे गतिशील तथा लचीले मस्तिष्क का निर्माण करना चाहिए जो प्रत्येक

परिस्थिति में साधनपूर्ण तथा साहसपूर्ण बनकर नवीन मूल्यों का निर्माण करना।

7. पाठ्यक्रम को ज्ञान तथा खोज की सीमाओं को बढ़ाने के लिए अन्वेषकों का सृजन करना।

8. पाठ्यक्रम को बालक में जनतंत्रीय भावना का विकास करना।

9. पाठ्यक्रम शिक्षण क्रियाओं तथा शिक्षक तथा छात्र के मध्य अन्तः प्रक्रिया के स्वरूप निर्धारित करना।

पाठ्यक्रम के मूल तत्व

शिक्षा की प्रक्रिया का सम्पादन शिक्षक द्वारा किया जाता है। शिक्षक अपनी क्रियाओं का नियोजन कक्षा शिक्षण के लिए करता है उसके प्रमुख तीन तत्व होते हैं – उद्देश्य, पाठ्य वस्तु एवं शिक्षण विधियाँ

'पाठ्यक्रम विकास' में पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण विधियों को महत्व दिया जाता है। शिक्षा पाठ्यवस्तु से कई उद्देश्य प्राप्त किये जा सकते हैं। परन्तु अधिगम अवसरों एवं परिस्थितियाँ ~~का~~ नियोजन उद्देश्यों के स्वरूप को सुनिश्चित करते हैं। शिक्षण तथा अधिगम प्रक्रिया पाठ्यक्रम के ही प्रमुख तत्व माने जाते हैं। इस प्रकार के चार प्रमुख तत्व माने जाते हैं -

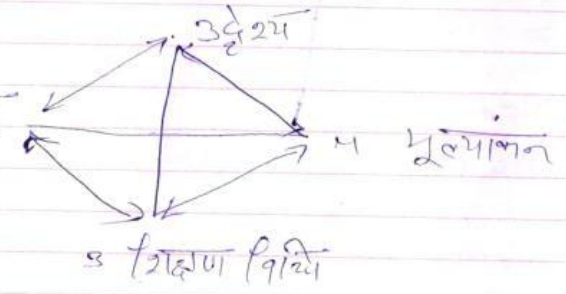

① उद्देश्य :- पाठ्यवस्तु, शिक्षण विधियाँ तथा परीक्षण का नियोजन उद्देश्यों की दृष्टि से किया जाता है। अधिगम - परिस्थितियों के स्वरूप से इन्हें प्राप्त करते हैं।

? पाठ्यवस्तु :-

पाठ्यवस्तु का स्वरूप अधिक व्यापक होता है।

अधिगम परिस्थितियाँ तथा परीक्षण परिस्थितियाँ उसके स्वरूप को सुनिश्चित करती हैं।

3. शिक्षण विधियाँ :—

उपयुक्त शैक्षण आव्यूह का चयन उद्देश्यों की प्राप्ति से किया जाता है। शिक्षण विधियों का सम्बन्ध पाठ्यवस्तु से होता है। शिक्षण आव्यूह अधिगम - परिस्थितियों को उत्पन्न करती है जिससे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन किये जाते हैं जो पाठ्यवस्तु के स्वरूप को सुनिश्चित करते हैं।

4. मूल्यांकन :—

परीक्षण द्वारा पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण विधियों की उपादेयता के सम्बन्ध में जानकारी होती है और पाठ्यक्रम के विकास के लिए दिशा भी मिलती है।

प्र। मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आधारित पाठ्यक्रम विकास का विस्तार से वर्णन करें।

उ॰ मनोवैज्ञानिक आधारित पाठ्यक्रम :-

मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी है। इस बौद्धिक प्राणी के सर्वांगीण विकास के लिए सबसे आवश्यक बात यह होती है कि हमें उनके अनुभव एवम् व्यवहार के संबंध में वास्तविक जानकारी हो। इस संदर्भ में मनोविज्ञान अत्यधिक सहायता प्रदान करता है। क्योंकि वह मनुष्य के अनुभव एवम् व्यवहार का विज्ञान है।

साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान वह सब कुछ है जो मनोवैज्ञानिक करते हैं परन्तु शास्त्रीय दृष्टि से यह स्पष्टीकरण पर्याप्त नहीं है। वस्तुतः मनोविज्ञान एक विकासशील विज्ञान रहा है तथा विकास के विभिन्न स्तरों पर इसका अर्थ भी परिवर्तित होता रहा है। प्रारम्भ में मनोविज्ञान को क्रमशः आत्मा का ज्ञान, मन का ज्ञान तथा चेतना का ज्ञान माना जाता रहा परन्तु वर्तमान में इसे 'व्यवहार के विज्ञान'

के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान का महत्व बढ़ता जा रहा है। अध्यापक को कदम-कदम पर मनोविज्ञान की सहायता लेनी पड़ती है तथा प्रत्येक समस्या के समाधान के लिए मनोविज्ञान की आवश्यकता अनुभव होती है। यही आवश्यकता पाठ्यक्रम को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करती है। शिक्षा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण ही वर्तमान समय में वैयक्तिक भेद के अनुसार शिक्षण-कार्य सम्भव हो सका है। पहले यह समझा जाता था कि प्रत्येक विद्यार्थी को प्रत्येक विषय पढ़ाया जा सकता है परन्तु अब नवीन मनोवैज्ञानिक खोजों के अनुसार व्यक्तिगत भेदों को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक है। पाठ्यक्रम का निर्धारण बालक की इन्हीं रुचियों, आवश्यकताओं, क्षमताओं एवं स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुसार किया जाता है।

आधुनिक मनोविज्ञान ही बताता है कि प्रत्येक बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाएं होती हैं। जैसे बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था,

वृद्धावस्था आदि। इन्हीं अवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए बालकों को शिक्षित किया जाना चाहिए। विकास की विभिन्न अवस्थाओं में रुचि के अभाव में बालक ~~बालकों का~~ एक नीरस शिक्षा प्राप्त करते रहते व अपना सर्वांगीण विकास करने में असमर्थ रहते।

शिक्षा में मनोविज्ञान के समावेश के परिणामस्वरूप ही अब बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया जाने लगा है पाठ्यक्रम का निर्धारण भी बालक को केन्द्र बनाकर किया जाता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का केन्द्र बालक को होना चाहिए। प्राचीन दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु शिक्षक को माना जाता था व छात्र को गौण स्थान प्राप्त था। शिक्षा की समस्त प्रक्रिया शिक्षक के चारों ओर घूमती रहती है परन्तु वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया छात्र के चारों ओर घूमती है व छात्र के अनुकूल कार्य करती है।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में बालक साध्य है और अध्यापक केवल एक साधन मात्र है। यही नहीं आज प्रत्येक कुशल

एवं योग्य शिक्षक के लिए जहाँ अपने विषय का ज्ञान होना आवश्यक है वहीं साथ ही साथ मानव स्वभाव एवं व्यवहार की परख भी होनी चाहिए। मनोविज्ञान ने यह भी सुझाव प्रस्तुत किया है कि पाठ्यक्रम में औपचारिक विषयों का अध्ययन मात्र न होकर खेलों और क्रियाओं का आयोजन होना चाहिए।

सामाजिक ~~आधार~~ आधारित पाठ्यक्रम :

मनुष्य स्वभाव से ही एक सामाजिक प्राणी है। उसका जन्म तथा विकास समाज में होता है समाज में रहते हुए मनुष्य को अनेकों कर्तव्यों का पालन करना होता है जिसमें शिक्षा मनुष्य का पथ-प्रदर्शन करती है। परन्तु यहाँ दर्शनीय बात यह है कि व्यक्ति शिक्षा प्राप्ति समाज में रहकर ही करता है। वह अकेले रहकर कार्य निर्वाह नहीं कर सकता। उसके प्रत्येक कार्य में समाज उसका सहायक एवं पथप्रदर्शक होता है इसके प्रचार समाज में रहने के लिए आवश्यक शिक्षा प्राप्ति के लिए अन्य आवश्यक कार्यों के संपादन के लिए व्यक्ति को समाज एवं इसमें रहने वाले अन्य

आवश्यक बातों के सम्पादन के लिए व्यक्ति को समाज एवं इसमें रहने वाले अन्य व्यक्तियों पर आश्रित रहना पड़ता है।

शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक प्राणी बनाती है और समाज शिक्षा के लिए आधार प्रस्तुत करता है। अन्य शब्दों में शिक्षा एवम सामाजिक जीवन की धारणा में गहरा सम्बन्ध है। एक के अभाव में दूसरे की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। समाज शास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है जो कि समाज शास्त्रीय सिद्धांतों को एवम् शिक्षा की समग्र प्रक्रिया को व्यवहारिक रूप देता है। इस प्रक्रिया में पाठ्यक्रम विषय वस्तु क्रियाएं, शिक्षालय, संगठन विधियां तथा मूल्यांकन सभी सम्मिलित हैं।

जॉन ड्यूवी ने भी सामाजिक चेतना को शैक्षिक विकास का आधार माना। ब्राउन ने भी इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कहा है कि "समूह की सामाजिक चेतना में व्यक्ति का योगदान शिक्षा व समाज के मिले-जुले प्रयासों के कारण ही सम्भव है।"

समाज शास्त्र शिक्षा शास्त्र को प्रभावित तत्व प्रदान करता है। इसका कारण यह है कि समाज शास्त्र

में शिक्षा के सामाजिक प्रभावों तथा मनुष्य के जीवन में उसकी गतिशीलता का अध्ययन किया जाता है। दूसरी ओर शिक्षा शास्त्र में समाज में व शिक्षा के स्वरूप तथा व्यक्तित्व विकास में योगदान आदि कारकों का अध्ययन किया जाता है।

यदि शिक्षाशास्त्र को समाज शास्त्र का योगदान प्राप्त न हो तो शिक्षा अपने उद्देश्य की पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकती है। समाज शास्त्र ने शिक्षाशास्त्र के पाठ्यक्रम को समाजोपयोगी बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। बिना समाज के सदस्यों की सामाजिक स्तर की पूर्ति को पाना सम्भव नहीं था। वर्तमान पाठ्यक्रम सामाजिक आदर्शों एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है। पाठ्यक्रम में समाज की दशाओं, समस्याओं तथा मान्यताओं को स्थान दिया गया है। पाठ्यक्रम बालकों को समाज-सेवा तथा जीविकोपार्जन के लिए तैयार करता है तथा वर्तमान पाठ्यक्रम में सामाजिक विषयों तथा सामाजिक क्रियाओं को विशेष स्थान प्राप्त है। इस प्रकार के क्षेत्र में समाज शास्त्रीय आधारों ने पाठ्यक्रम को अत्यन्त प्रभावित किया है और साथ ही समृद्ध भी किया है।

पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले सामाजिक हेतु / कारण

समाज तथा शिक्षा परस्पर एक दूसरे पर अत्यन्त प्रभाव डालते हैं। जहाँ एक ओर शिक्षा के द्वारा सामाजिक परिवर्तन लाना सम्भव होता है वहीं दूसरी ओर समाज मे होने वाले परिवर्तन शिक्षा पर भी व्यापक प्रभाव डालते हैं। जब समाज में भौतिक व व्यावसायिक परिवर्तन होते हैं, व्यावसायीकरण व नगरीकरण में तीव्रता आती है या समाज में कुछ कुप्रथायें आती हैं तो शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को परिवर्तित स्थितियों में सामंजस्य बिठाने के योग्य बनाया जाता है तथा शिक्षा के द्वारा ही समाज में व्याप्त कुप्रथाओं व कुरीतियों का उन्मूलन का प्रयास किया जाता है। यह परिवर्तन पाठ्यक्रम के द्वारा लाया जाता है। वर्तमान समय में समाज में हो रहे वाली वैज्ञानिक, तकनीकी, व व्यवसायिक शिक्षा इस सामाजिक परिवर्तन का ही परिणाम है। साथ ही समाज में बढ़ती शिक्षा की माँग के फलस्वरूप विभिन्न दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था Distance Education System अल्पकालीन पाठ्यक्रम शिक्षक शिक्षा आदि नवीन तथ्यों का भी पदार्पण हुआ है। वर्तमान समय में दी जाने वाली कम्प्यूटर शिक्षा भी समाज की माँग का ही परिणाम है।